

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में किशोर विद्यार्थियों हेतु एड्स के प्रति जागरूकता पर एक अध्ययन

शत्रुघन भोई

(सहायक प्राध्यापक)

ग्रेसियस कॉलेज ऑफ एजुकेशन बेलभाटा, अभनपुर, रायपुर (छ.ग.)

सारांश :

एड्स से किशोरों में फैलने वाली भयंकर बीमारियों में से एक है जो कि विश्व के हर भाग में रहने वाले लोगो के जीवन के लिये खतरा बन चुकी है। किशोरों हेतु एड्स विषय पर शिक्षा का आयोजन नवीन विधियों तथा तकनीकी के माध्यम से किया जाना चाहिए क्योंकि किशोरवस्था एक ऐसा काल है जिसके कारण बालक में एक अतिरिक्त क्षमता व शक्ति का प्रादुर्भाव होता है। किशोरों की क्षमता एवं शक्तियों का उचित उपयोग करने के लिए शिक्षा के स्वरूप पर ध्यान दिया जाना चाहिए। शिक्षा की प्रक्रिया में किशोरों को शिक्षा देने के साथ-साथ उसके व्यक्तित्व विकास पर भी कार्य करना चाहिए।

भूमिका :

शिक्षा वर्तमान परिस्थितियों में समायोजन रास्ट्रीयता नैतिकता के उच्चतम आयामों को प्राप्त करने वाली एक आमोद एवं जीवनदानी शक्ति है। आज शिक्षा का उद्देश्य बालक के वर्तमान का निर्माण करता है शिक्षा और सामाजिक प्रक्रिया की एक स्थिति है जिसका उद्देश्य समाज के सदस्यों को आजीवन अपने वर्गों में रहने योग्य बनाता है। आज शिक्षा का अर्थ कठिन परिश्रम करने के रूप में नहीं दिया जाता है शिक्षा ग्रहण करना है। बालक नई वस्तु को सीखने आनंद की अनुभूति करे इसलिए अवस्था वैसे ही निर्मित हो जाती है। वास्तव में शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो मनुस्य के जन्मजात शक्तियों के स्वाभाविक एवं सामंजस्य पूर्ण विकास में योग देती है उसे अपने वातावरण में सामंजस्य स्थापित करने में सहायता देती है उसे जीवन और नागरिकता के कर्तव्यों का और दायित्वो के लिए तैयार करती है और इसके व्यवहार चिंतन विचार और दृष्टिकोण में ऐसा परिवर्तन करते है जो समाज देश और विश्व के लिए हितकर होता है।

समस्या :

आधुनिक परिप्रेक्ष्य में किशोर विद्यार्थियों हेतु एड्स के प्रति जागरूकता पर एक अध्ययन।

किशोरावस्था :

किशोरावस्था मनुष्य के जीवन का बसंतकाल माना गया है। यह काल बारह से उन्नीस वर्ष तक रहता है परन्तु किसी-किसी व्यक्तियों में यह बाईस वर्ष तक चला जाता है। यह काल भी सभी प्रकार के मानसिक शक्तियों के विकास का समय है भावों के विकास के साथ-साथ बालक की कल्पना का विकास होता है।

एड्स जागरूकता :

एचआईवी एड्स की बीमारी है जो कि मानव के रोग प्रतिरोधक क्षमता या कहे कि यह रोग व्यक्ति की सुरक्षा तंत्र को क्षति पहुँचाता है। जिसमें सुरक्षा तब मामूली कीटाणुओं रोग से नहीं लड़ सकते पाते हैं। और विभिन्न प्रकार के अन्य रोगों से ग्रसित हो जाता है। परन्तु एचआईवी सालो समय लेता है सुरक्षा तंत्र को क्षति पहुंचाने में इसलिए इसे अवसरवादी रोग भी कहते है। एचआईवी धीरे धीरे आक्रमण करता है और रोग प्रतिरोधक कोशिका की अनुवांसिक तत्व को जन्म के लिए प्रयोग करते है और प्रतिरोधक कोशिका CD_4T कोशिका को नष्ट कर देता है एड्स के पूर्ण उपचार के अभाव के कारण इसके तेज फैलाव को रोकने का एक मात्र साधन एड्स के प्रति जागरूकता प्रदान करने के लिए हम जागरूक हो किशोरो के विद्यालय द्वारा उचित दिशा बोध देना राष्ट्र निर्माण के लिए अति आवश्यक है।

उद्देश्य :

- 1) शासकीय विद्यालय के किशोर छात्र-छात्राओ में अध्ययन के प्रति जागरूकता में अन्तर पर अध्ययन।
- 2) अशासकीय विद्यालय के किशोर छात्र-छात्राओ में अध्ययन के प्रति जागरूकता में अन्तर पर अध्ययन।
- 3) शासकीय विद्यालय के किशोर छात्राओं एवं अशासकीय विद्यालय के किशोर छात्रों में एड्स के प्रति जागरूकता में अन्तर पर अध्ययन।

- 4) शासकीय विद्यालय की किशोर छात्रों एवं अशासकीय विद्यालय की किशोर छात्राओं में एड्स के प्रति जागरूकता में अन्तर पर अध्ययन।
- 5) शासकीय विद्यालय के किशोर छात्राओं एवं अशासकीय विद्यालय के किशोर छात्रों में एड्स के प्रति जागरूकता में अन्तर पर अध्ययन।
- 6) शासकीय विद्यालय की किशोर छात्रों एवं अशासकीय विद्यालय की किशोर छात्राओं में एड्स के प्रति जागरूकता में अन्तर पर अध्ययन।

परिकल्पना :

परिकल्पना H_0 शासकीय विद्यालय के किशोर छात्र - छात्राओ में एड्स के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

परिकल्पना H_1 अशासकीय विद्यालय के किशोर छात्र - छात्राओ में एड्स के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

परिकल्पना H_2 शासकीय विद्यालय के किशोर छात्राओ एवं अशासकीय विद्यालय के किशोर छात्रों में एड्स के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

परिकल्पना H_3 शासकीय विद्यालय के किशोर छात्रों एवं अशासकीय विद्यालय के किशोर छात्राओ में एड्स के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

परिकल्पना H_4 शासकीय विद्यालय के किशोर छात्राओ एवं अशासकीय विद्यालय के किशोर छात्राओ में एड्स के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

परिकल्पना H_5 शासकीय विद्यालय के किशोर छात्रों एवं अशासकीय विद्यालय के किशोर छात्रों में एड्स के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

परिसीमा :

- ✚ इस शोध अध्ययन में छ.ग. राज्य के धरसीवां ब्लाक के छात्र - छात्राओं तक सीमित है।

✚ इस अध्ययन में शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों को लिया गया है।

अनुसंधान विधि :

इस अनुसंधान में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

जनसंख्या : प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता ने छ.ग. राज्य के धरसीवां ब्लाक के आधुनिक परिप्रेक्ष में किशोर विद्यार्थियों हेतु एड्स के प्रति जागरूकता पर एक अध्ययन हेतु शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया है।

न्यादर्श :

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए धरसीवां ब्लाक के शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 200 छात्रों को लिया गया है। जिसमें 100 शहरी 100 ग्रामीण क्षेत्र के छात्र-छात्राओं को न्यादर्श के रूप में लिया गया है, और इन छात्रों का चयन यादृच्छिक विधि के माध्यम से किया गया है।

शोध उपकरण :

प्रस्तुत शोध समस्या में शोधकर्ता ने किशोर विद्यार्थियों हेतु एड्स के प्रति जागरूकता को जानने के लिए डॉ. मधु अस्थाना द्वारा निर्मित प्रमाणीकृत एड्स जागरूकता मापनी का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी विधि :

सांख्यिकी अनुसंधान का मूल आधार है। परिकल्पनाओं के परीक्षण हेतु प्राप्त आकड़ों का विश्लेषण किया जायेगा। इस हेतु आवश्यक सांख्यिकी जैसे - मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, प्रमाणिक त्रुटि एवं टी परीक्षण का प्रयोग किया गया है।

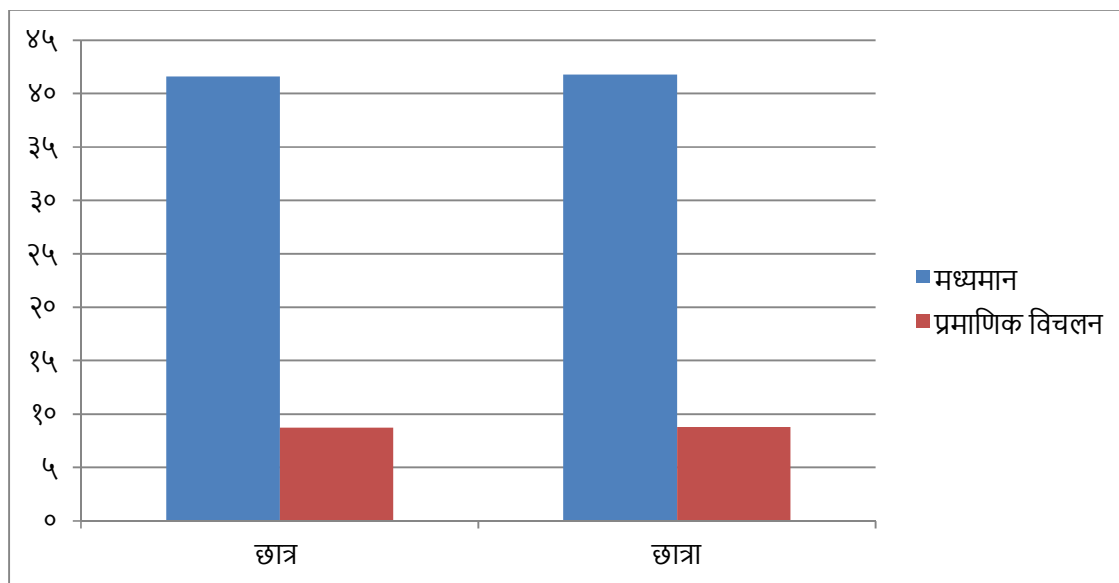
प्रदत्तो का विश्लेषण :

परिकल्पना H_0 शासकीय विद्यालय के किशोर छात्र-छात्राओं में एड्स के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

उपयुक्त परिकल्पना को सत्यापित करने के लिए शासकीय विद्यालयों के 100 विद्यार्थियों 50 छात्र 50 छात्राओं को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया तथा उन पर एड्स के प्रति जागरूकता में टी मूल्य (सार्थक अंतर) की गणना की गई इसका स्पष्टीकरण तालिका में दर्शाया गया है -

तालिका 01

| क्र. | तुलनात्मक समुह | प्रदत्तो की संख्या | मध्यमान | प्रमाणिक विचलन | टी मूल्य |
|----------------------------------|----------------|--------------------|---------|----------------|----------|
| 1 | छात्र | 50 | 41.6 | 8.74 | 0.114 |
| 2 | छात्रा | 50 | 41.8 | 8.80 | |
| DF=98 P<0.05 सार्थक अंतर नहीं है | | | | | |



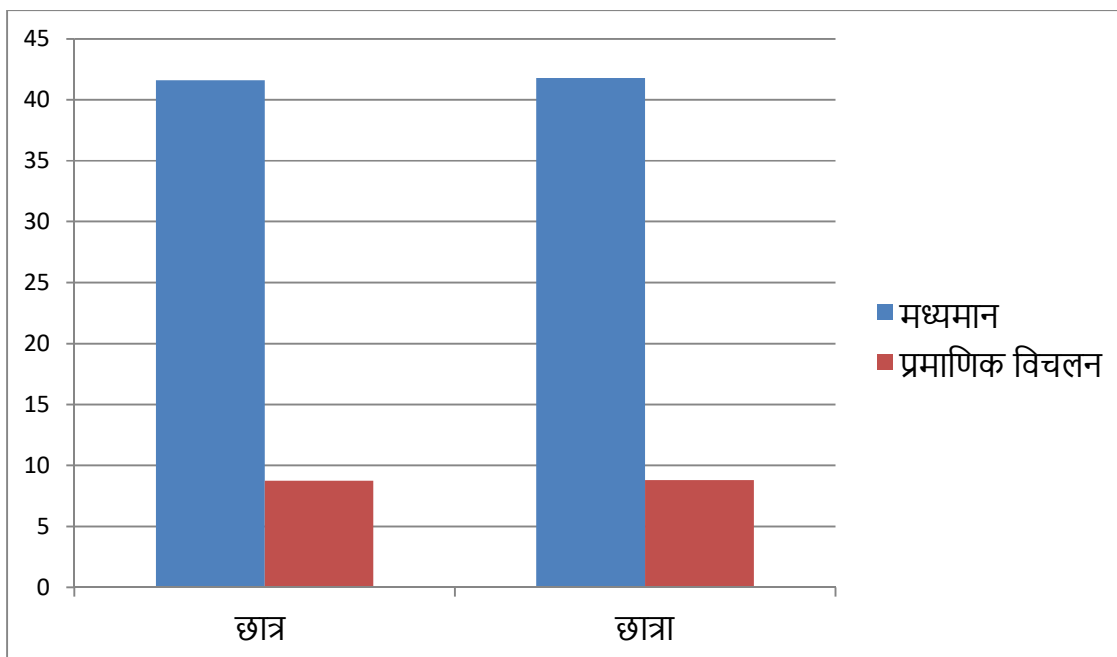
उपयुक्त सारणी के अनुसार शासकीय विद्यालयों के 100 विद्यार्थियों की जागरूकता का मध्यमान जिसमें 50 छात्राओं का मध्यमान 41.8 और 50 छात्रों का मध्यमान 41.6 तथा प्रमाणिक विचलन क्रमशः 8.80 तथा 8.74 प्राप्त हुआ इसके मध्य टी का मान 0.114 प्राप्त हुआ जो कि $df = 98$, के $P < 0.05$ सार्थकता स्तर के मान 1.96 से कम है। इसका तात्पर्य है कि दोनों समूह कि जागरूकता स्तर में सार्थक अंतर नहीं है अतः परिकल्पना स्वीकृत है।

परिकल्पना H_1 अशासकीय विद्यालय के किशोर छात्र-छात्राओं में एड्स के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

उपयुक्त परिकल्पना को सत्यापित करने के लिए अशासकीय विद्यालय के 100 विद्यार्थियों 50 छात्र 50 छात्राओं को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया तथा उन पर एड्स के प्रति जागरूकता में टी मूल्य (सार्थक अंतर) की गणना की गई जिसका स्पष्टीकरण तालिका क्रमांक 02 में दर्शाया गया है -

तालिका क्रमांक 02

| क्र. | तुलनात्मक समुह | प्रदत्तो की संख्या | मध्यमान | प्रमाणिक विचलन | टी मूल्य |
|----------------------------------|----------------|--------------------|---------|----------------|----------|
| 1 | छात्र | 50 | 47.4 | 7.44 | 1.18 |
| 2 | छात्रा | 50 | 49.1 | 7.26 | |
| DF=98 P<0.05 सार्थक अंतर नहीं है | | | | | |



उपयुक्त सारणी के अनुसार अशासकीय विद्यालयों के 100 विद्यार्थियों की जागरूकता का मध्यमान जिसमें 50 छात्राओं का मध्यमान 49.1 और 50 छात्रों का मध्यमान 47.4 तथा प्रमाणिक विचलन क्रमशः 7.26 तथा 7.44 प्राप्त हुआ।

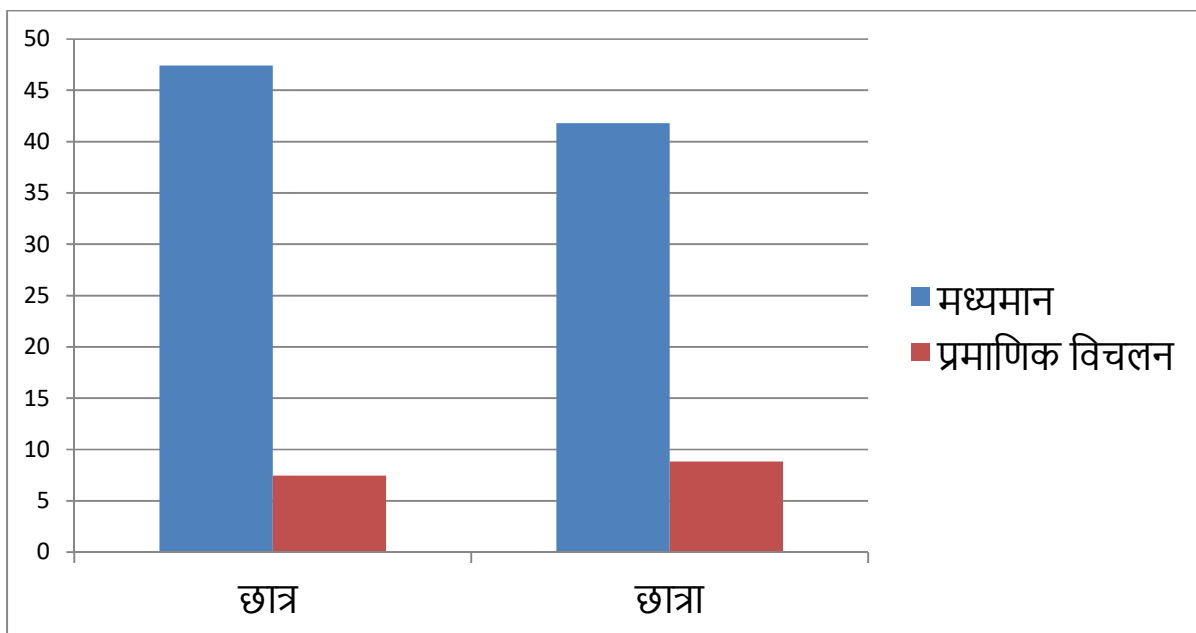
इसके माध्य टी का मान 1.18 प्राप्त हुआ जो कि k $df=98$, के $p<0.05$ सार्थकता स्तर के मान 1.96 से कम है। इसका तात्पर्य है कि दोनों समूहों की जागरूकता स्तर में सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना स्वीकृत है।

परिकल्पना H_2 शासकीय विद्यालय के किशोर छात्राओं एवं अशासकीय विद्यालय के किशोर छात्रों में एड्स के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

उपयुक्त परिकल्पना को सत्यापित करने के लिए शासकीय विद्यालयों 50 छात्राओं एवं अशासकीय विद्यालयों के 50 छात्रों के न्यादर्श रूप में चयनित किया गया तथा उन पर एड्स के प्रति जागरूकता में टीम मूल्य सार्थक अंतर की गणना की गई जिसका स्पष्टीकरण तालिका क्रमांक 03 में दर्शाया गया है -

तालिका क्रमांक 03

| क्र. | तुलनात्मक समुह | प्रदत्तों की संख्या | मध्यमान | प्रमाणिक विचलन | टी मूल्य |
|-----------------------------|----------------|---------------------|---------|----------------|----------|
| 1 | छात्र | 50 | 47.4 | 7.44 | 3.43 |
| 2 | छात्रा | 50 | 41.8 | 8.80 | |
| DF=98 P<0.05 सार्थक अंतर है | | | | | |



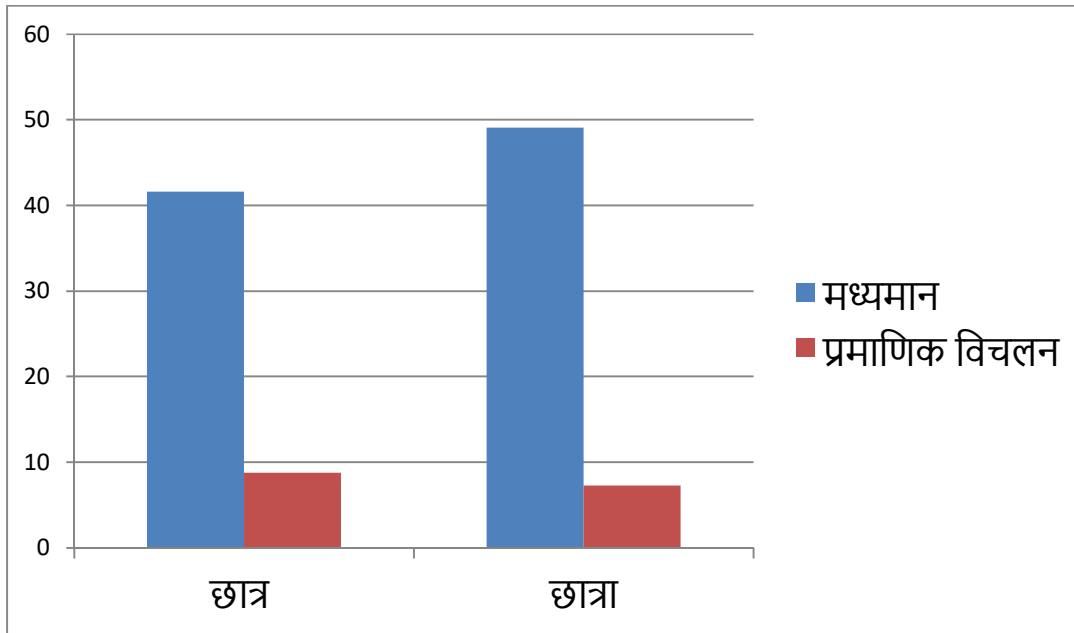
उपयुक्त सारणी के अनुसार शासकीय विद्यालयों के 50 छात्राओं की जागरूकता एवं अशासकीय विद्यालयों के 50 छात्रों कुल 100 विद्यार्थियों की जागरूकता का मध्यमान जिसमें 50 छात्राओं का मध्यमान 41.8 और 50 छात्रों का मध्यमान 47.4 तथा प्रमाणिक विचलन क्रमशः 8.80 तथा 7.44 प्राप्त हुआ। इसके मध्य टी का मान 1.96 से अधिक है। इसका तात्पर्य यह है कि दानों समूहों की जागरूकता स्तर में सार्थक अंतर है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत है।

परिकल्पना H_3 शासकीय विद्यालय के किशोर छात्रों एवं अशासकीय विद्यालय के किशोर छात्राओं में एड्स के प्रति जागरूकता कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

उपयुक्त तालिका को सत्यापित करने के लिए शासकीय विद्यालय के 50 किशोर छात्रों एवं अशासकीय विद्यालय की किशोर छात्राओं को 50 कुल 100 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया तथा उन पर एड्स के प्रति जागरूकता में टी मूल्य (सार्थक अंतर) की गणना की गई जिसका स्पष्टीकरण तालिका क्रमांक 04 में दर्शाया गया है -

तालिका क्रमांक 04

| क्र. | तुलनात्मक समुह | प्रदत्तो की संख्या | मध्यमान | प्रमाणिक विचलन | टी मूल्य |
|-----------------------------|----------------|--------------------|---------|----------------|----------|
| 1 | छात्र | 50 | 41.6 | 8.74 | 4.68 |
| 2 | छात्रा | 50 | 49.1 | 7.26 | |
| DF=98 P<0.05 सार्थक अंतर है | | | | | |



उपयुक्त सारणी के अनुसार शासकीय विद्यालय के 50 किशोर छात्रों एवं अशासकीय विद्यालय के 50 किशोर छात्राओं कुल 100 विद्यार्थियों की जागरूकता का मध्यमान जिसमें 50 छात्राओं का मध्यमान 49.1 और 50 छात्रों का मध्यमान 41.6 तथा प्रमाणिक विचलन क्रमशः 7.26 तथा 8.74 प्राप्त हुआ। इसके मध्य टी का मान 4.68 प्राप्त हुआ जो कि k $df=98$, के $P<0.05$ सार्थकता स्तर के मान 1.96 से अधिक है। इसका तात्पर्य है कि दोनों समूहों की जागरूकता स्तर में सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत है।

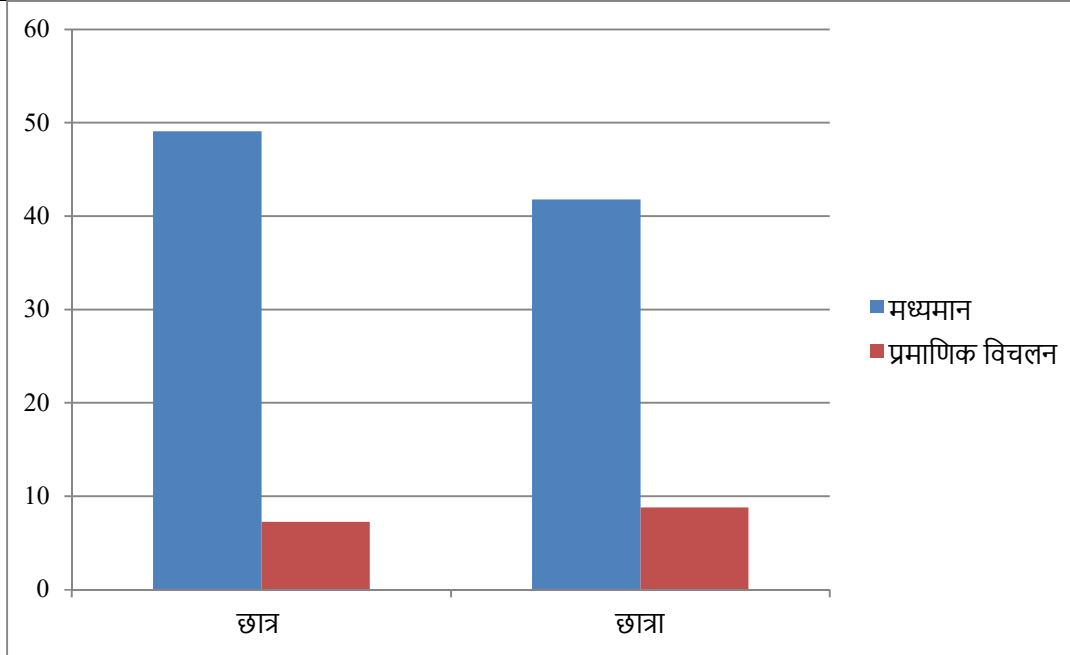
परिकल्पना H_4 शासकीय विद्यालय के किशोर छात्राओं एवं अशासकीय विद्यालय के किशोर छात्राओं में एड्स के प्रति जागरूकता में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

उपयुक्त परिकल्पना को सत्यापित करने के लिए शासकीय विद्यालय के 50 किशोर छात्राओं एवं अशासकीय विद्यालय के 50 किशोर छात्राओं कुल 100 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया तथा उन पर एड्स के प्रति जागरूकता में टी मूल्य (सार्थक अंतर) की गणना की गई जिसका स्पष्टीकरण तालिका क्रमांक 05 में दर्शाया गया है -

तालिका क्रमांक 05

| क्र. | तुलनात्मक समुह | प्रदत्तो की | मध्यमान | प्रमाणिक | टी मूल्य |
|------|----------------|-------------|---------|----------|----------|
|------|----------------|-------------|---------|----------|----------|

| | | संख्या | | विचलन | |
|-----------------------------|--------|--------|------|-------|------|
| 1 | छात्र | 50 | 49.1 | 7.26 | 4.53 |
| 2 | छात्रा | 50 | 41.8 | 8.80 | |
| DF=98 P<0.05 सार्थक अंतर है | | | | | |



उपयुक्त सारणी के अनुसार शासकीय विद्यालय के 50 किशोर छात्राओं एवं अशासकीय विद्यालय के 50 किशोर छात्राओं कुल 100 विद्यार्थियों की जागरूकता का मध्यमान जिसमें 50 छात्राओं का मध्यमान 41.8 और 50 छात्रों का मध्यमान 49.1 तथा प्रमाणिक विचलन क्रमशः 8.80 तथा 7.26 प्राप्त हुआ। इसके मध्य टी का मान 4.53 प्राप्त हुआ जो कि $k_{df=98}$ के $P<0.05$ सार्थकता स्तर के मान 1.96 से अधिक है। इसका तात्पर्य है कि दोनों समूहों की जागरूकता स्तर में सार्थक अंतर नहीं है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत है।

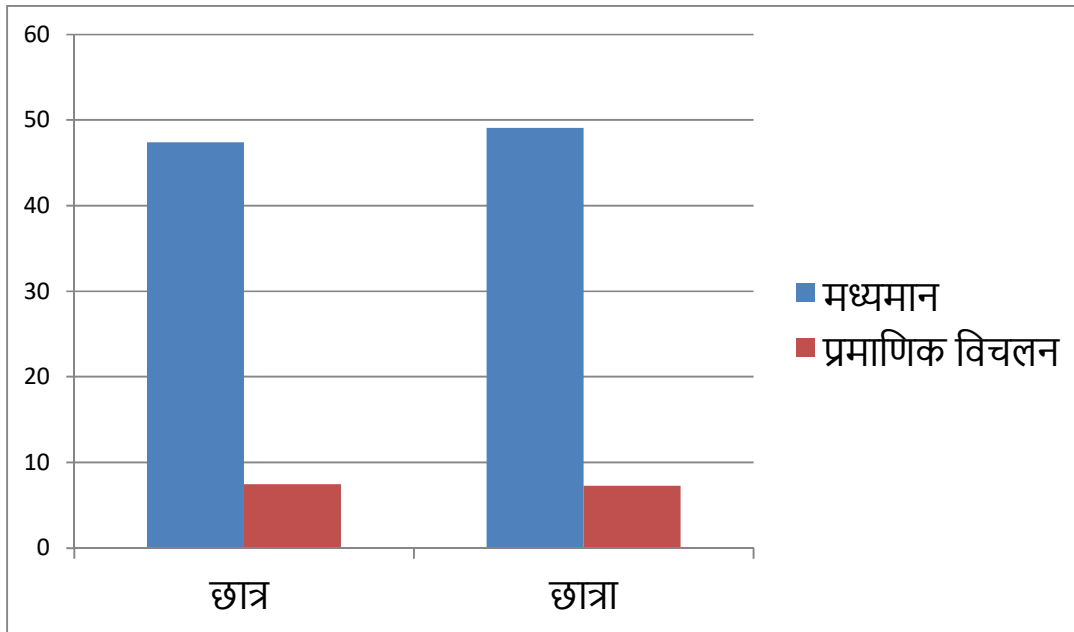
परिकल्पना H_5 शासकीय विद्यालय के किशोर छात्रों एवं अशासकीय विद्यालय की किशोर छात्रों में एड्स के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा।

उपयुक्त परिकल्पना को सत्यापित करने के लिए शासकीय विद्यालय की किशोर छात्र एवं अशासकीय विद्यालय की किशोर छात्रों को 100 विद्यार्थियों को न्यायाधीश के रूप में चयनित किया गया तथा उन पर एड्स के प्रति जागरूकता में

टी मूल्य सार्थक अंतर की गणना की गई जिसका स्पष्टीकरण तालिका क्रमांक 06 में दर्शाया गया है-

तालिका क्रमांक 06

| क्र. | तुलनात्मक समुह | प्रदत्तो की संख्या | मध्यमान | प्रमाणिक विचलन | टी मूल्य |
|-----------------------------|----------------|--------------------|---------|----------------|----------|
| 1 | छात्र | 50 | 41.6 | 8.74 | 3.6 |
| 2 | छात्रा | 50 | 47.4 | 7.44 | |
| DF=98 P<0.05 सार्थक अंतर है | | | | | |



उपयुक्त सारणी के अनुसार शासकीय विद्यालय के 50 किशोर छात्रों एवं अशासकीय विद्यालय के 50 किशोर छात्रों कुल 100 विद्यार्थियों की जागरूकता का मध्यमान जिसमें 50 छात्राओं का मध्यमान 47.4 और 50 छात्रों का मध्यमान 41.6 तथा प्रमाणिक विचलन क्रमशः 7.44 तथा 8.74 प्राप्त हुआ। इसके मध्य टी का मान 3.6 प्राप्त हुआ जो कि क df=98, के P<0.05 सार्थकता स्तर के मान

1.96 से कम है। इसका तात्पर्य है कि दोनों समूहों की जागरूकता स्तर में सार्थक अंतर है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत है।

निष्कर्ष :

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य किशोरों में एड्स जागरूकता के क्षेत्र में अध्ययन करना है। जिसे प्रमाणिकृत प्रश्नावली द्वारा आंकड़े प्राप्त कर उन का “टी मूल्य” ज्ञात किया गया तथा परिकल्पनाओं के आधार पर प्राप्त निष्कर्ष निम्न प्रकार से है-

- वर्तमान समय में शासकीय विद्यालयों के किशोर छात्र एवं छात्राओं में एड्स के प्रति एक समान जागरूकता देखने को मिलता है। इसी प्रकार अशासकीय विद्यालयों के किशोर छात्र एवं छात्राओं में एड्स के प्रति एक समान जागरूकता देखने को मिलता है। इसका कारण वर्तमान आधुनिक समय छात्र एवं छात्राओं को विद्यालय एवं समाज में दिया जाने वाला समान शिक्षा व दर्जा है।
- शासकीय विद्यालयों की छात्राओं एवं अशासकीय विद्यालयों के छात्रों के जागरूकता इस सर में सार्थक अंतर देखने को मिलता है एवं शासकीय विद्यालयों की किशोर छात्रों एवं अशासकीय विद्यालयों की किशोर छात्राओं के जागरूकता स्तर में भी सार्थक अंतर देखने को मिलता है। अतः कहीं ना कहीं शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षा प्रणाली में ना कोई अंतर तो है। इस कारण इनका एक ही समस्या को लेकर जागरूकता का स्तर अलग-अलग है।
- शासकीय विद्यालयों की किशोर छात्राओं एवं अशासकीय विद्यालय के छात्राओं के जागरूकता इस्तर में सार्थक अंतर देखने को मिलता है एवं शासकीय विद्यालयों के किशोर छात्रों एवं अशासकीय विद्यालय की छात्रों के जागरूकता इस्तर में सार्थक अंतर देखने को मिलता है। निष्कर्ष अतः ना केवल शासकीय व अशासकीय विद्यालय छात्र और छात्राओं के मध्य जागरूकता का स्तर अलग अलग है अपितु शासकीय व अशासकीय विद्यालय के छात्र छात्र एवं छात्रा छात्रा के मध्य भी जागरूकता स्तर भिन्न है। अर्थात् यह शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों की शिक्षा स्तर में अंतर को कहीं ना कहीं उजागर करता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

सरीन एवं सरीन (1954) - शैक्षिक अनुसंधान विधियां, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा 02, पृष्ठ क्रमांक 140 - 142.

कपिल एच.के. (1954) - अनुसंधान विधियां (व्यवहारपरक विज्ञान में), कचहरीघाट, आगरा, पृष्ठ क्रमांक 37 - 50

आर. पारसनाथ (1999) - अनुसंधान परिचय, आगरा 3 लक्ष्मी नारायण अग्रवाल, पृष्ठ क्रमांक 296,298,305,310

डॉ. आर.ए. शर्मा (1954) - शिक्षा अनुसंधान कचहरीघाट, आगरा, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ - 250001, पृष्ठ क्रमांक 704 - 726

पाठक पी.डी. (2007 - 2008) - शिक्षा मनोविज्ञान, अग्रवाल पब्लिकेशन आगरा, पृष्ठ क्रमांक 119-129 ।

सक्सेना एस.एन.आर. (2007) उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ, 3 - 5

एच.आई.वी. के तीन दशक - जय पी. नारायण।

भारत में एच.आई.वी. एड्स पर अनुसंधान - ओ.पी. अग्रवाल, ए.के. शर्मा एवं इंद्रयान येड

भारत में रक्त के संपर्क से एच.आई.वी. - एक दवेशणा अध्ययन - कोरया ,मैरेट एवं हेसिलवीटसडेविड ।

एड्स - कानून और मानवता - भारतीय कानून संस्था ।

दैनिक भास्कर (समाचार पत्र) - दैनिक समाचार प्रेस रायपुर, 31 दिसंबर 2014

नवभारत दैनिक (समाचार पत्र) - नवभारत समाचार प्रेस रायपुर, 31 दिसंबर 2014